DZIHI8 *पाठ-13*

मराठा राज्य का उदय एवं भारत में यूरोपियों का आगमन

मराठा शक्ति का उदय किसी एक व्यक्ति अथवा विशेष व्यक्ति समूह का कार्य न था, बल्कि इसका आधार महाराष्ट्र के सम्पूर्ण निवासी थे, जिन्हांेने जाति, भाषा, धर्म, साहित्य और निवास स्थान की एकता के आधार पर राष्ट्रीयता की भावना को जन्म दिया।

औरंगज़ेब की प्रशासकीय अव्यवस्था के कारण केवल उत्तर भारत में ही नहीं वरन् दक्षिण भारत की मुस्लिम रियासतों में भी गहरा असन्तोष था। सोयी हुई मराठा जाति को रामदास, तुकाराम, श्री एकनाथ जैसे सन्तों ने एक भाषा, एक ही प्रकार के रीति-रिवाज और एक सी जीवन पद्धति की भावना उत्पन्न करके एक सूत्र में बाँध दिया। मराठों में राष्ट्रीय भावना का संचार करने के लिए शिवाजी के रूप में मराठों को एक वीर योद्धा तथा नेता मिल गया। शिवाजी ने मराठों को संगठित करके दक्षिण में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

शिवाजी (1674-1680ई0)

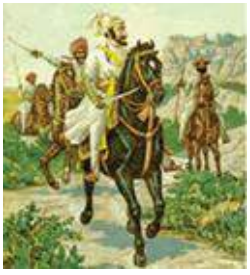

शिवाजी अपने सैनिकों के साथ

मराठा साम्राज्य के प्रथम शासक शिवाजी थे। शिवाजी का जन्म 6 अप्रैल 1627 ई0 को शिवनेर के दुर्ग में हुआ था। इनके पिता का नाम शाहजी भोंसले और माता का नाम जीजाबाई था। शाहजी भोंसले पहले अहमदनगर के निजाम तथा बाद में बीजापुर के दरबार में नौकरी करते थे। शिवाजी के पालन-पोषण का पूरा दायित्व उनकी माता जीजाबाई पर था। शाहजी ने शिवाजी को अपनी एक जागीर पुणे दे रखी थी। शिवाजी साहसी थे और सोचते थे कि वह दूसरे राजाओं की सेवा क्यों करें। खुद का राज्य क्यों न बना लें। मराठों का अलग राज्य बनाने

का उद्देश्य लेकर शिवाजी 18 साल की उम्र से ही सेना इकट्ठी करने लगे। धीरे-धीरे अपनी शक्ति संगठित करके एक स्वतंत्र राज्य बनाने के उद्देश्य से शिवाजी ने आस-पास के क्षेत्रों पर आक्रमण करके उन्हें जीत लिया। उन्होंने पूना के आसपास के कई पहाड़ी किलों को जीता और नये दुर्गों का निर्माण भी कराया, जैसे- रायगढ़ का दुर्ग।

रायगढ़ का दुर्ग

शिवाजी को स्वतंत्र राज्य की स्थापना करने में दक्षिण के बीजापुर और अहमदनगर के सुल्तानों तथा दिल्ली के मुगल बादशाह से संघर्ष करना पड़ा। शिवाजी को मारने के लिए बीजापुर के सुल्तान ने अपने एक प्रमुख सेनापति अफजल खाँ को एक विशाल सेना के साथ भेजा। अफजल खाँ ने शिवाजी को मारने के लिए, चालाकी से उन्हें अपने तम्बू में बुलाया। आइए अब आगे की कहानी पढ़ें।

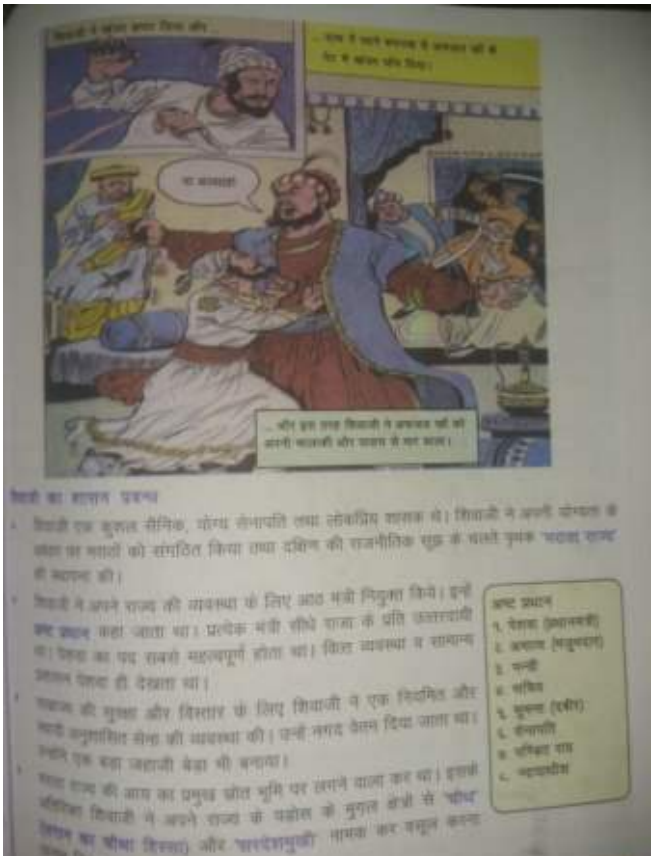

शिवाजी को नियंत्रित करने के लिए मुगल बादशाह औरंगज़ेब ने सूबेदार शाइस्ता खाँ को भेजा। शिवाजी ने उसे पराजित कर दिया। इसके बाद औरंगज़ेब ने जयसिंह को शिवाजी के पास भेजा। जयसिंह के समझाने बुझाने पर औरंगज़ेब से संधि करने के लिए शिवाजी औरंगज़ेब के दरबार में गए।

वहाँ शिवाजी के स्वतंत्र व्यवहार से वह असंतुष्ट हो गया और उसने शिवाजी को कैद कर लिया। शिवाजी औरंगज़ेब की इस कैद से एक योजना बनाकर निकल गये। इसके बाद उन्होंने सूरत पर आक्रमण कर बहुत सी सम्पत्ति इकट्ठी कर ली। शिवाजी का रायगढ़ में एक गंगाभट्ट के द्वारा राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने छत्रपति की उपाधि धारण की। शिवाजी का राज्य उत्तर में (सूरत के निकट) से दक्षिण में कारवार तक तट के किनारे-किनारे हुआ था। १६८० ई. में शिवाजी की मृत्यु हो गयी।

शिवाजी का शासन प्रबन्ध

- शिवाजी एक कुशल सैनिक, योग्य सेनापति तथा लोकप्रिय शासक थे। शिवाजी ने अपनी योग्यता के बल पर मराठों को संगठित किया तथा दक्षिण की राजनीतिक शून्य के बाद पृथक 'मराठा राज्य' की स्थापना की।
- शिवाजी ने अपने राज्य की व्यवस्था के लिए आठ मंत्री नियुक्त किये। इन्हें **अष्ट प्रधान** कहा जाता था। प्रत्येक मंत्री सीधे राजा के प्रति उत्तरदायी था। पेशवा का पद सबसे महत्वपूर्ण होता था। वित्त व्यवस्था व सामान्य प्रशासन पेशवा ही देखता था।
- साम्राज्य की सुरक्षा और विस्तार के लिए शिवाजी ने एक नियमित और स्थायी अनुशासित सेना की व्यवस्था की। उन्हें नगद वेतन दिया जाता था। उन्होंने एक बड़ा जहाजी बेड़ा भी बनाया।
- मराठा राज्य की आय का प्रमुख स्रोत भूमि पर लगने वाला कर था। इसके अतिरिक्त शिवाजी ने अपने राज्य के पड़ोस के मुगल क्षेत्रों से 'चौथ' (उपज का चौथा हिस्सा) और 'सरदेशमुखी' नामक कर वसूल करना

अष्ट प्रधान
१. पेशवा (प्रधानमंत्री)
२. अमात्य (मजुमदार)
३. मन्त्री
४. सचिव
५. सुमन्त (दबीर)
६. सेनापति
७. पण्डित राव
८. न्यायाधीश

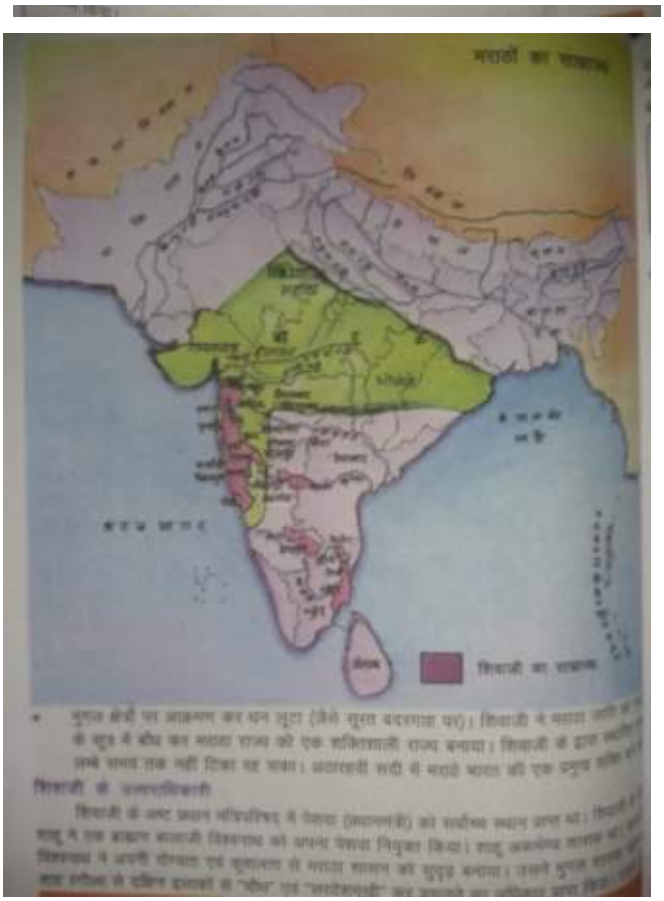

इलाकों पर पुनः अधिकार किया जिन पर मुग़लों का अधिकार हो गया था। सैनिक और आर्थिक दृष्टि से मराठों ने अपनी शक्ति को बहुत बढ़ा लिया और अब वे मुगल सेना का सामना भली भाँति कर सकते थे। मुगल बादशाह औरंगज़ेब को मराठों ने लगातार गोरिल्ला या छापामार युद्धों में व्यस्त रखा।

छापामार युद्ध प्रणाली-सेना की छोटी टुकड़ी जिसमें सैनिकों की संख्या कम होती थी। ये शत्रु से आमने सामने युद्ध न करके पहाड़ियों व जंगलों में छिपकर उन पर पीछे से हमला करके भाग जाते। इस प्रणाली को छापामार युद्ध प्रणाली कहते थे। शिवाजी ने मुगलों से लड़ने के लिए छापामार युद्ध प्रणाली का प्रयोग किया था। इसे गोरिल्ला युद्ध प्रणाली भी कहते थे।

मराठा संगठन

बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद उनका पुत्र बाजीराव प्रथम पेशवा बना। इस प्रकार पेशवा पद के वंशानुगत होने की परम्परा प्रारम्भ हुई। बाजीराव प्रथम एक कुशल सेनापति,

महत्वाकांक्षी तथा उच्चकोटि का कूटनीतिज्ञ था। उसने मालवा एवं गुजरात पर आधिपत्य स्थापित करके मराठा साम्राज्य का विस्तार किया।बाजीराव प्रथम की सबसे बड़ी उपलब्धि मराठा संगठन का निर्माण था। उन्होंने मुग़ल विजित प्रदेशों को मराठा सरदारों में बाँट दिया। ये प्रमुख मराठा सरदार थे नागपुर के राघोजी भोंसले, बड़ौदा के पिल्ली जी गायकवाड़, इंदौर के मल्हर राव होल्कर और ग्वालियर के रामजी सिन्धिया।बाजीराव प्रथम ने इनको अपने-अपने क्षेत्रों में सम्पूर्ण स्वतंत्रता दी। वे अपने-अपने क्षेत्रों में अपने अनुसार कर लगाने के लिए स्वतंत्र थे लेकिन उन्हें एक निश्चित रकम पेशवा को भेंट करनी पड़ती थी। इन मराठा सरदारों को पेशवा के अधीन रहकर कार्य करना होता था और समय पड़ने पर पेशवा के नेतृत्व में सैनिक अभियान में जाना पड़ता था। इस प्रकार मराठा सरदारों का यह समूह मराठा संगठन कहलाया जिसका मुखिया पेशवा था।बाजीराव प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बालाजी बाजीराव द्वितीय पेशवा बना। उसने मालवा, गुजरात, बुंदेलखण्ड, बंगाल, उड़ीसा, बीजापुर तथा औरंगाबाद के कुछ हिस्सों पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार दक्षिण में मराठों का दबदबा बढ़ गया। राजपूत, जाट, रुहेले अफगान भी मराठों की शक्ति से आतंकित हो गये थे।

नीचे दी गई तालिका को पूरा कीजिए: -

यूद्ध	वर्ष	किन-किन के बीच	परिणाम
पानीपत का प्रथम युद्ध			
पानीपत का द्वितीय युद्ध			

पानीपत का तीसरा युद्ध

मराठों ने पंजाब पर भी आक्रमण कर उसे जीत लिया। जिस पर अफगानिस्तान के शासक अहमदशाह अब्दाली का अधिकार था। अब्दाली ने रुहेले अफगानों की सहायता से पंजाब पर पुनः अधिकार करके दिल्ली की ओर प्रस्थान किया जहाँ सन् 1761 में पानीपत के मैदान में मराठों और अब्दाली की सेनाओं के बीच युद्ध हुआ। मराठों को जाट, राजपूत एवं सिख सरदारों का सहयोग नहीं मिला और अहमदशाह अब्दाली विजयी रहा। अहमदशाह

अब्दाली की जीत का एक कारण ऊँटों पर रखी घूमने वाली तोपें भी थीं जिन्होंने मराठों को काफी नुकसान पहुँचाया।

पानीपत का युद्ध मराठों के लिए घातक सिद्ध हुआ क्योंकि पंजाब के आक्रमण से अहमदशाह अब्दाली का भारत आगमन हुआ। इस युद्ध में पहली बार मराठों ने छापामार युद्ध पद्धति के स्थान पर खुले रूप से मैदान में युद्ध के तरीकों को अपनाया, जिसके वे अभ्यस्त नहीं थे। अतः युद्ध में उच्च कोटि के मराठे सैनिकों एवं पेशवाओं को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। मराठों के पतन से अंग्रेजों को भी साम्राज्य विस्तार का सुअवसर प्राप्त हो गया।

अठारहवीं शताब्दी में भारत की स्थिति

अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में भारत के विभिन्न भागों में देशी और विदेशी शक्तियों के अनेक छोटे-बड़े राज्य स्थापित होने लगे थे। बंगाल, अवध और दक्षिण आदि प्रदेशों ने अपनी स्वतंत्रता स्थापित कर ली। भारत के उत्तर-पश्चिम की ओर से विदेशी आक्रमण होने लगे। सन् 1739 में नादिरशाह के आक्रमण ने कमजोर मुगल साम्राज्य की जड़े हिला दीं थी और सन् 1761 में अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण ने मराठों के अस्तित्व को लगभग समाप्त ही कर दिया। इस समय कोई एक ऐसी शक्ति नहीं थी जो विशाल भारत को एकजुट रख सकती। मुगलों के पतन, मराठों की हार तथा छोटे-छोटे राज्यों के आपस की लड़ाई ने यूरोपीय कम्पनियों को शीघ्र ही सर्वश्रेष्ठ बना दिया। विदेशी व्यापारी कम्पनियों ने भारत की राजनीति में हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया था।

किस मुगल शासक ने विदेशी कम्पनियों को भारत में व्यापार करने की इजाजत दी थी। लिखिए

.....
.....।

इस समय तक कौन-कौन सी विदेशी कम्पनियाँ भारत में आ चुकी थीं। उनके नाम लिखिए .....
.....।

जिस समय यूरोप में पुनर्जागरण आन्दोलन जोर पकड़ रहा था, भारतीय समाज लोकवाद और भक्तिवाद के गहरे सागर में डूबा हुआ था। वह दूसरे देशों में हो रहे विकासों को नजरअन्दाज कर रहा था। मुगल सम्राट एवं उच्च वर्ग करोड़ों रुपये ऐश्वर्य सामग्री बनाने व जुटाने में खर्च कर देते थे। उन्होंने घरेलू औद्योगिक व्यापार को सुदृढ़ बनाने की बजाय विदेशों से भोग-विलास की वस्तुएँ मँगवाना उचित समझा।

जहाँ यूरोप में किताबें मुद्रणालय में छपती थीं, भारत में किताबें अभी तक हाथों से लिखी जाती थीं जिसका उदाहरण हमें बाबरनामा एवं अकबरनामा जैसी हस्तलिखित पुस्तकों से मिलता है।

उधर यूरोप में जहाँ प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा था तथा लड़ाई के लिए नये-नये हथियार, बन्दूक, हल्की तोपें आदि का निर्माण हो रहा था, भारतीय अभी भी पैदल सेना, हाथी, तलवार, भालों तथा भारी-भरकम तोपों का इस्तेमाल कर रहे थे।

यद्यपि अठारहवीं सदी में भारत में व्यापार और वस्तु निर्माण का विस्तार होता रहा परन्तु यूरोप की तुलना में भारत न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बल्कि अन्य मामलों में भी पिछड़ा ही रहा। उदाहरण के लिए - माल का ज्यादातर निर्माण छोटे पैमाने पर ही किया जाता रहा। मशीनों का कोई इस्तेमाल नहीं किया गया और कारीगर सरल से सरल औजारों से ही कार्य करते रहे। नतीजा यह हुआ कि कोई भी कारीगर चाहे जितना ही कुशल क्यों न रहा हो उसकी उत्पादक क्षमता निम्न कोटि की ही रही। पश्चिम की तरह यहाँ के कारीगर तरक्की करके व्यापारी और उद्यमी नहीं बन सके।

सोलहवीं शताब्दी तक इस तरह के यंत्र यूरोप में बन चुके थे जिसके आधार पर यूरोपीय नाविक देश-विदेश की यात्रा करने में सफल रहे।

इसके अलावा दुनिया में यूरोपीय नाविक नये-नये देशों की खोज कर रहे थे तथा भारत में विदेशी यात्री व विदेशी व्यापारी आ रहे थे। शक्तिशाली मुगल भारतीय नौसेना को सुदृढ़ बनाने के बजाय यूरोपीय जहाजों पर निर्भर रहे। उधर यूरोपीय देशों ने शक्तिशाली नौसेना तथा सुसंगठित व्यापारी बेड़े के कारण भारत के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बनाये तथा इसका उन्होंने भरपूर लाभ उठाया।

मुगलों ने विदेशी व्यापार के महत्व को समझ लिया था। इस कारण उन्होंने यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों को संरक्षण एवं प्रोत्साहन प्रदान किया। राष्ट्र के आर्थिक विकास में वे नौसेना के महत्व को नहीं समझ सके। इस कारण भारतीय व्यापारी एवं निर्माता शक्तिशाली नौसेना तथा सुसंगठित व्यापारी बेड़े के अभाव में विदेशों से होने वाले व्यापार के मुनाफे का अधिक लाभ नहीं उठा सके।

इस प्रकार विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्रों में भारत अन्य देशों से पिछड़ता गया। मुगल शासक वर्ग ने उन्हीं बातों में दिलचस्पी रखी जो उनके तात्कालिक महत्व तथा विलास की थी। भविष्य को निर्धारित करने वाली बातों के प्रति उनकी कोई रुचि नहीं थी। इसके दूरगामी परिणाम हुए और भारत आने वाले 200 वर्षों तक विदेशी ताकतों की जंजीरों में जकड़ा रहा।

कारखाने में काम करते हुए लोग

कारखाने में तोप का निर्माण	
विदेशी सुसंगठित व्यापारी बेड़े	यूरोपीय सैनिकों द्वारा बन्दूक का इस्तेमाल

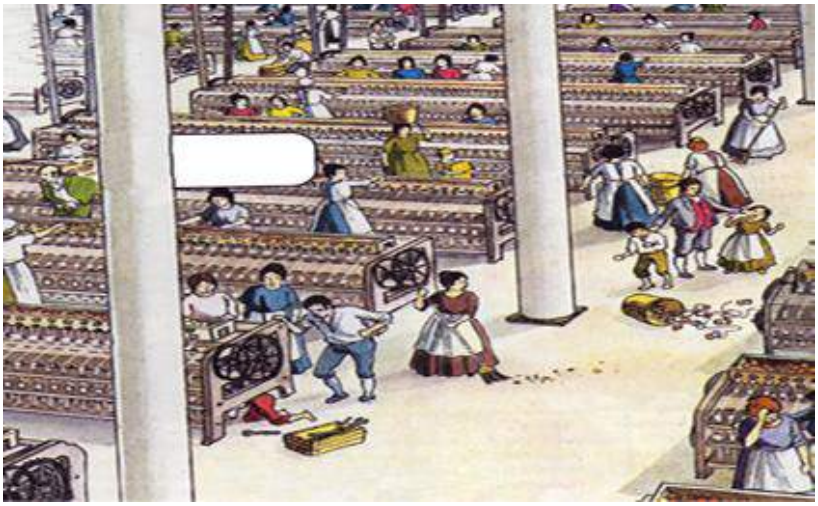

सूत कातने का कारखाना

शब्दावली

चैथ - मुगल राज्य को दिए जाने वाले कुल लगान का एक चैथाई भाग जिसको मराठे अतिरिक्त कर के रूप में मराठा राज्य के बाहर के क्षेत्रों से वसूलते थे।

सरदेशमुखी - सम्पूर्ण आय का दसवाँ भाग जिसको मराठे सारे क्षेत्र से वसूल करते थे।

अष्टप्रधान - आठ मंत्रियों की एक समिति जो शासन कार्यों में मराठा शासक को सलाह देने का कार्य करती थी।

अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

(क) शिवाजी का जन्म कब और कहाँ हुआ था।

(ख) शिवाजी के माता-पिता का नाम बताइए।

(ग) शिवाजी का राज्याभिषेक कहाँ हुआ था।

(घ) दक्षिण में मराठा शक्ति के उदय का वर्णन कीजिए।

(ङ) शिवाजी के शासन प्रबन्ध के विषय में लिखिए।

(च) पानीपत की तीसरी लड़ाई क्यों हुई ? इसके क्या परिणाम हुए ?

2. निम्नलिखित कथनों में सही कथन के सामने सही का तथा गलत कथन के सामने गलत (×) का निशान लगाइए-

क. मराठों ने छापामार युद्ध प्रणाली अपनायी ।

ख. अफजल खाँ मुगलों का एक प्रमुख सरदार था।

ग. शिवाजी का रामनगर में राज्याभिषेक हुआ।

घ. शिवाजी ने शाइस्ता खाँ को बघनख से मारा।

3. सही जोड़े बनाइए-

नादिरशाह का आक्रमण	1680 ई0	
अहमदशाह अब्दाली का आक्रमण	1739	ई0
शिवाजी की मृत्यु	1670	ई0
सूरत पर आक्रमण	1761	ई0

प्रोजेक्ट वर्क

पाठ के आधार पर छत्रपति शिवाजी के जीवन चरित्र व उपलब्धियों पर आधारित एक चार्ट बनाइए।